

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळे.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक

५२२९(२२५)

ग्रंथ नाम

८

विषय

मराठी काव्य.



५११
६-२

पदांचे वाड

५१६१५२२१
२५

५४-३८३१०.



मराठी-संस्कृतकोश

(१)
॥ इपा शीः नामा मृने उपमा काये
॥ द्या वीः प्रा द्या वी ठेवा ची ईडा
॥ पौ डा द्या वी ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ तथा वरी देव न द्याः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ परमनोमीम ता द्या शी चे रचे
॥ रः नीर्मलक तया ॥ १ ॥ इक्षी
॥ क जो कं न्मला यतीः जानुनी जामा
॥ नीमथा ॥ २ ॥ आनठान ये मृनेः
॥ जो हा शी की ती नी भानी नः प्रयागगा

॥ जैसाः स हजची पुर्ननी ज रंगवी
 ॥ तैसा ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥
 ॥ गुनगान्नी धाव गोवी दाः गन इगावी
 ॥ च्या हा री गन इगावी ॥ आ हां काश
 ॥ च्या धरा भा जः वासन च्या उत
 ॥ रडी उत शी तः ॥ हो तः को ग प्रा
 ॥ न क्द आव धे आव ची तेः ई स ये पं
 ॥ च फनी इ ख ये न भा ते ॥ १ ॥ ग वृ
 ॥ का मी नी झे इ दा ट ला हेः क डु प्र पंच

॥ गोड्वाटतआहे: गोडपरमार्थकडु
 ॥ कैसा होये: लेन्मभरनाची क्रांतन
 ॥ से सोये ॥ २ ॥ ईजाभीचाचे येन
 ॥ बहूंकैले: ईजाभीचाचे येन
 ॥ गोल: तळुगुचीतद्याआठवी
 ॥ ल: सडुनेकुलीतल ॥ ३ ॥ ६६६
 ॥ ६६६ ॥
 ॥ येईवांभीरंगुपांडुरंगो: माडीलारं
 ॥ गाढाकुडावीननरुचेमडलाका

(5)

॥ हीः कज्ञभीकाईः करीतोका ननाये
॥ नवनाहीः बैरहृदई ॥ १ ॥ शद्धकु
॥ शल्लीतानयेमजः वाटतीलाजः प्र
॥ नउनीवीनवीनसायेकुजः ज्ञान
॥ जीगुज ॥ २ ॥ महाटीवाचा
॥ हीनः संसक संपाः कलकु
॥ शल्लीतातानेमानः हकैचैज्ञानः
॥ ३ ॥ आतावका हांचकावेंः गाव
॥ अैकावेंः शामसुंदराप्रभदयावेंः

(6)

॥ जमरु सकरी ता हेतनु नुरे आं ताः नु
॥ ने मरे नीरु नीरु मदा ता रे ॥ १ ॥
॥ औरी खुन दा वी ता स दु त शव ता ह्का
॥ लीक नुरे ची दे ता वः जीव नी वा
॥ के द गे ले वा व नी नि रंग ना ये क
॥ मे व ॥ ३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ रु ध ड हारी ना मा ता प ड री ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ रुं ग यो गा दी क न र दे ह्का आ ध न
॥ ते व्नी या रु ड री ग व ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥



[illegible]

(7)
॥ वी. व्यापरी जे नमली गंगा ॥ ३ ॥ ॥ ६५५ ॥

॥ ५५५५५ ॥

॥ गा. तो वारु देव कुम्ही ओकाः चीतठा

॥ ईठे उनीका वारु काळ येरुनीक

॥ री तो जे ज्ञा ॥ १ ॥ तम मर आ

॥ धीः सांदा वारु धीः गाठ धाकुनी

॥ या मुळ बंदीः पीठ बीकुट बंदीः

॥ लक्ष्मी लाकुनी राहा गा. वीदी गद्द

॥ आत्म आयु शेमानु वीदहः रीत गाणती

॥ लआर्ष रात्री वायेः ह्या तबाळ जरापी

(४)

॥ हारोमं ज्ञाप्येः पुढे कलना ज उर ल का ये
॥ इराश। स्तेनक। संगरनाही मर वसाः सां
॥ ही मा या बा तो ही म व आ राः का ही न ले म
॥ ल प ड ल फां साः पुढे आ ला का ल चा
॥ व ल सा रे ग ॥ ॥ थो हु तो क री ल म
॥ पा ठः सा व च न या ब ल क टः
॥ गो हु क र न आ ल व ट रे ॥ भा वी न
॥ वी रों बा न क ल ज नाः क र जे हु नी
॥ थो र ना हु नाः दान दया वें म ड ई त क



(8A)

॥ दीनाः कृपा भूने स्मराशमरा नाराः

114) | e e e e e e e e e e | (e e e e) | e e e e |

www.

॥ कोन्हीवंदाकोन्हीनींदाःआम्हाहारी

॥ चैरुनाचायत ॥ कायैतुभा

॥ श्रीगुरुजः आम् । तुम्ही तुल्यशयः ॥

॥ लम्हासा रीत्वा नावः तत्काजर्व

॥ स्वयं मुक्तावें ॥ २ ॥ तुका मूने आरेख

॥ ह्यः देवता सायै ह्यै वै ह्य ॥ ३ ॥ ध

1) 4444444444

॥ न के हा स्वाई हो स्वाईः मा घेशनी मे सो
 ॥ बाई मा आ बली या पं ठरी बरावः
 ॥ आव द्या देवा चा ही देवा ध्या न के च
 ॥ डी मु डी रो तीः मा घे मा उ न वा क्षी
 ॥ ती ॥ ५ ॥ न के के च डी रावः रो टी
 ॥ कर ता सा टी दे आ न के ग नो बा
 ॥ वी का लः ला डी दे का ल ॥ ५ ॥
 ॥ न के ये ता ल स्व ता लः ज ह्ये या चे
 ॥ ता डी का ल ॥ ५ ॥ न के मु ज्या मै र प स
 ॥ इः हु तो का न ले खी पो री ॥ ५ ॥ रु का

(9A)
॥ मन्त्रे ची तीः दशरत्न कवभाचाप
॥ ती ॥ १ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ रुद्रै नाम गायत्री नये वेदाः रुद्रै
॥ रूपपाही न नीला मेरा ॥ १ ॥ जयेशमा
॥ अवदा पुर्नक ॥ श्री पाठने न तो
॥ श्री मेघनामा ॥ ध्यान रुद्रै धरी
॥ न आतं यामी ॥ नावी नारन पडे
॥ आता चामी ॥ पाकु पाई धुआना
॥ अब दु देवाः मन्त्रे के सब करीन
॥ चे र्जन से वा ॥ ३ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

(10A)

(10A)

॥ पो ह्रीं मा धव मात वामन वडाः
॥ श्री कृष्ण शास्त्रा न्वं रीः धारी तेल
॥ वरी प्रभु नरुहरीः गोवींद कुरुंबी
॥ रीः श्री री गोपति कुरुपतो च दुप
॥ तीः श्री ता पात कुरु राः अं अं जे
॥ वं न जे वी ताः श्री री म रा श्री आ
॥ न की च्या व री रा ॥ ५५ ५५ ५५ ५५
॥ प तीत पावन नाम अं कुरु न आ नो मी
॥ द्वा राः न के री मात व छे ल म न रुं

(11)
॥ ज्ञातुं तो माचारः ॥ १ ॥ माझीया सं
॥ चीतां: आता हो कासन तसे: वीरच
॥ जना माझी तुझे करीन मी हांसे:
॥ या जे गट घेतो नीहाती पीटीन
॥ ती ही लोकी: तपावन सक्तव
॥ जे ल मोठा धा ॥ ३ ॥ येकाजीव
॥ शमी पदी स्थ पाणी जरी: तरी
॥ चब्रीद बांधी नाही तर साडसड
॥ करी ॥ ४ ॥ ५६७८९०११

(12)

श्रीवीठल

- ॥ मोलाचे आयु शे सरोनी जायेः
॥ पुर्व पुन्ये होये लावयाचा ॥ १ ॥
॥ आन्न ताडेन ते सेवटी पाहा
॥ ताः नश्ये फे आला तुला ॥ २ ॥
॥ करावी तडे येईल कार्या
॥ श्रीः ध्याये वीठला श्री सुकाला
॥ गी ॥ ३ ॥ सां सलीया घन होतसे

॥ ठेवनेः तैसा नाश येन जो झीकराः
 ॥ ४॥ केल्या हा शीकरी पर लोकी
 ॥ कामाः जो डवी नथे मा पास्तुनी
 ॥ घा॥ ५॥ तुका सारा आयु शा
 ॥ चे मोलः न च युबो ल रामा
 ॥ बीना॥ ६॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ श्रीवीठलू
 ॥ नाहीवै कुठाचे ठाईः नाहीयोगी
 ॥ याचे हुद्र ईः माझे भक्त गाती जेथेः



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com